श्रीप्रकाश मिश्र की दो कविताएं

(1)

कंचनजंघा

एक

सोने का चाँद
चाँदी का सूरज
कंचनजंघा पर

चीजों ने अपना स्थान बदल दिया है
कंचनजंघा पर
वहाँ कपड़े पहनना विवस्त्र होना है

इसे इस तरह भी कह सकते हैं कि
वहाँ विवस्त्र होना कपड़े पहनना हो गया है
जिसके पार
आँखों से नहीं
आँखों से पार्थिव को नहीं
नग्नता को नग्नता से देखा जाता है

उसमें सब कुछ पिघलता जाता है
चाँद, सूरज, बर्फ, चट्टान
भरता जाता है एक शून्य को
जो बनता जाता है महाशून्य

दो

कंचनजंघा
न तो कंचन है
न जंघा

मेरु है
जगत् का नहीं
तो पर्वत का

जैसे शरीर में मेरु है
पद्म सहस्रार में उठने की जगह मेरु है
औरत में धसने की जगह मेरु है
वज्र में बिजली का मेरु है

मेरु है तो
हम देखते हैं
जगत् से खालीपन गायब है

कंचनजंघा है तो
आसमान में उगता है पानी का पेड़
खिलता है आसमान का फूल

जो न पानी है
न पेड़ है
न आसमान है
न फूल

फिर भी दोनों है
एक सोची हुई अवास्तविकता
इसीलिए कंचनजंघा

कंचन भी है
और जंघा भी

(2)

गाङटाक

यह दोपहर का नम है

ठोस कोहरे की नीलिमा को
चीर कर बह रही है
दूध की नदी

नदी स्थिर है
हीरे की कनी में जब्त
रोशनी की लकीर की तरह

गति से बहुत दूर
एक हहास उभर रही है
नीली घाटी की गहराइयों से
ध्वनि गति का सूचक है

अचानक तड़कता है आकाश
बिजलियों में कौंधती है
नदी की गति

ध्वनि की गति
सूचित नहीं होती उजाले में
दब जाती है तड़क् के आगे

कौन कहता है

हहास न भी सूचित हो
दब भी जाय
बिजली की कड़क स्वयं एक ध्वनि है
सुनकर उसे उड़े जा रहे हंस
मानसरोवर के सिंधु की ओर

कोई छोर नहीं
उनके गंतव्य का
नदी की नदी का भी
हहास की गति का भी

गति विश्वव्यापी है
दोपहर के नम में

(**परिचय :** श्रीप्रकाश मिश्र चर्चित कथाकार, कवि एवं आलोचक हैं। पूर्वोत्तर भारत पर केंद्रित श्रीप्रकाश की कई महत्त्वपूर्ण कृतियाँ चर्चा के केंद्र में रही हैं। वर्तमान में श्रीप्रकाश मिश्र इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश में रहते हैं। संपर्क सूत्र : 9451142647)